

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

सार्वजनिक आरोप लगाने वाले का अपरिहार्य उत्तरदायित्व

अगले एक वर्ष तक हम गोस्वामी तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर एक गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे। इस विमर्श का महत्व अपने निजी आचरण और सार्वजनिक जीवन को सत्य, करुणा तथा न्याय आदि की कसौटी पर परखते हुए सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत को प्रतिष्ठित करने में है। श्रृंखला का स्वरूप तीर्थयात्राओं के दौरान पुष्पा और मेरे बीच होने वाले शास्त्रार्थ का रहेगा जिसमें तुलसी के वचनों और जीवन के अनुभवों के सहारे विचार को परते खुलेंगे। अयोध्या में कनकभवन और नागेश्वरनाथ के दर्शन करके हम राम की पैंथी पर टहल रहे थे। पुष्पा ने पूछा, “ऊ नौम वाली बात याद है? सबने मोहन को आरा चलावत देखो, पैंड से डाल काटत कौने देखो हतो?”

उस दिन पड़ोसी फोन लेकर आथ था। वीडियो में मोहन गिरी हुई हरी डाल के टुकड़े कर रहा था। नीचे लिखा था कि माली ने पैंड की डाल काट डाली। मोहन ने बताया, डाल पहले से गिरी थी; चौकीदार ने रास्ता साफ करने को कहा था। पुष्पा ने ऊपर देखा। दूटने की जगह लंबी खपचिच्यों और लटकती छाल थी; नीचे आरे से कटे सिरों पर चिकनाहट थी। गौली मिट्टी में डाल गिरेने को चौड़ी छाप पर नया बुरादा पड़ रहा था। चौकीदार ने भी पुष्टि की।

“काट रहा है” से ‘काट दिया’ तक पहुँचते हुए रास्ता साफ करता आदमी पैंड का अपराधी हो गया था। वीडियो सही था; उसके नीचे लिखे वाक्य ने उसमें एक अप्रमाणित पिछली घटना जोड़ दी थी।

डाल के चिह्न और चौकीदार की बात साथ रखकर ही घटना का क्रम खुला था। डाल किस घड़ी, किस कारण टूटी, इतना तब भी निश्चित नहीं था। जितना सम्भव में आया, उसे कहने के लिए शेष अज्ञान छिपाया आवश्यक नहीं था।

मैंने कहा, “मन्थरा की बातों में भी सही समाचार और ग़ाढ़ा हुआ संवंध मिलते हैं। राम का अभिषेक होने वाला है, भरत बाहर है, इससे वह कैकेयी के विरुद्ध षड्यंत्र समझाती है।”

कहहिं झुटिफुरि बात बनाई। ते प्रिय तुम्हिकरुह मैं माहि।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 16 से पूर्व, चौपाई 2 का पूर्वार्ध; मन्थरा-कैकेयी संवाद।)

सजि प्रतीतिवहुबिधिभिङ्गि छोलौ। अवध साइसाती तब बोलौ।।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 17 से पूर्व, चौपाई 2 का उत्तरार्ध; मन्थरा का वर्णन।)

‘सजि प्रतीति’ में विश्वास पैदा करने का उद्योग है। कथन अपनी कटुता को निष्ठा का प्रमाण बनाता है। सुनने वाले को संशय करना भी अपने हितेषी का अपमान लगा सकता है।

तुलसी ‘अवध’ कहते हैं। बात दो व्यक्तियों में हो रही है, किंतु उसका फल पूरे नगर को भोगना है। निजी विश्वास जब निर्णय बनाता है, उसकी पहुँच बोलने-सुनने वाली से बहुत आगे जाती है। मोहल्ले का संदेश भी मोहन के उन नियोजकों तक पहुँच सकता था जिन्होंने घटना देखी नहीं थी।

“पर पड़ोसी तो खुदई भरम गए हतो। उनछो मन्थरा कोह बाना एर हो?”

“सही टोका। जानबूझकर भ्रम रचना और स्वयं प्रमित होना अलग है। भली नीयत से भी गलत आरोप लग सकता है।”

पुष्पा को कैकेयी का आरम्भिक उत्तर याद था:-

प्रान ते अधिक रामु प्रिय भोरौ। तिन्हकै तिलक छोपु कसु तोरौ।।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 15 से पूर्व, चौपाई 4 का उत्तरार्ध; कैकेयी-मन्थरा संवाद।)

“भरत को अहित हो जैहै, ई डर बैठो तो बरसन की प्रीति पे संदेह होन लागे, पुष्पा बोलौ।”

अनिष्ट हुआ नहीं था; उसकी आसंका पुराने स्नेह का अर्थ बदल रही थी। अपने प्रिय व्यक्ति, धर्म या समुदाय की चिंता स्वाभाविक है। वही चिंता किसी तीसरे के अपराध का प्रमाण कैसे हो जाएगी?

सत्य वचन मानस विमल कपट रहित करतुति।

तुलसी रघुवर सेवकहि संके न कलिजगु भूति।।

(दोहावली, दोहा 87; रामसेवक के मन, वचन और कर्म की संगति।)

“मैंहो सत्य बोलने के साथ मन की निर्मलता और निष्कपट कर्म हैं”, मैंने कहा-“हमारे प्रसंग में इससे अपनी नीयत और आचरण जाँचने की प्रेरणा मिलती है। निष्कपट होने से किसी की जानकारी अपने आप पूरी नहीं हो जाती।”

“जैसे तुमछो लगत है हमाई बात पूरी हो जाई, अउ हम कहत रह जात हैं।”

मैंने आशा उत्तर केक लिया। पुष्पा ने हँसकर आगे बोलने की झुट्टी दी। पैंथी पर उरते यात्रियों को निकल जाने देकर हम फिर चल पड़े।

“अयोध्या में सत्य की कठिन परीक्षा वचनपालन है। कैकेयी ने वर माँगे भी नहीं हैं और दशरथ कह रहे हैं”:-

रघुकुल रीति साँ चलि आई। प्रानजहँदुब्रबचनु न जाई।।

नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम कहिं कि कोटिक गुंजा।।

सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। वेदपुराणविक्रित मनु गाए।।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 28 से पूर्व, चौपाई 2 उत्तरार्ध और चौपाई 3; दशरथ-कैकेयी संवाद।)

वचन दूसरे के मन में भरोसा उत्पन्न करता है; उसे सुविधानुसार छोड़ना उस भरोसे को चोट पहुँचाना है। लेकिन कैकेयी उसी सत्यप्रतिष्ठा को अपने आग्रह का साधन बनाती हैं:-

सत्य सराहिंकरहेहुबर उना। जानहेलुहिंहागिगवनेना।।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 30 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; कैकेयी का दशरथ से कथन।)
“तो साँच को दुहाई देके दूसरे को दुख भी दओ जा सकत है, पुष्पा बोलौ। वचन तुम देओ, वन में बेटा जाए। जावों दुख है, उखों भी पुछो।”

उनकी आपत्ति आज के निर्णय की थी। तुलसी के प्रसंग में राम स्वयं वचन की मर्यादा स्वीकारते हैं। लौटने का आग्रह करते सुमंत्र से कहते हैं:-

धरमु न दूसर सत्य समाना।आगम निगम पुरान बखाना।।

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा 95 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; राम-सुमंत्र संवाद।)

दशरथ की निष्ठा का मूल्यवान् तुलसी यहाँ भी करते हैं:-

यहाँ भय और लाभ की आशा परामर्श बिगाड़ते हैं। हमारे सामने रोजी खोने का डर था। पदवान की बात सहज स्वीकार ली जाए और श्रमिक से बार-बार प्रमाण माँगा जाए तो सत्य तक पहुँचने की सामाजिक व्यवस्था ही पक्षपाती हो जाती है।

“अउ अपनी कही गलत बात सुधारो, तौ ऊ बचन से फिरबो भओ का?”
“बचन में किसी कर्म का दायित्व लिया जाता है; आरोप में किसी घटना के बारे में दावा होता है। पहला निभाने के लिए अपने आचरण को प्रतिज्ञा के अनुरूप करना है; दूसरे में कथन को उपलब्ध प्रमाण के अनुरूप करना है। भूल सुधारना यहाँ सत्यनिष्ठा का निर्वाह होगा।”

पुष्पा ने मोहन का उत्तर याद दिलाया। मैंने उससे पूछा था, ‘गुस्सा आया होगा?’ उसने कहा था, “आया था। रोज इन्हीं धरों में काम करना है।”

सचिव बैद गुर तीनौ जौ प्रिय बोलहिं भय आसा।

राज धर्म तन तीन कर होइ बेगिहौ नासा।।

(रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, दोहा 37; रावण के चापलूस सलाहकारों के प्रसंग में कवि का कथन।)

यहाँ भय और लाभ की आशा परामर्श बिगाड़ते हैं। हमारे सामने रोजी खोने का डर था। पदवान की बात सहज स्वीकार ली जाए और श्रमिक से बार-बार प्रमाण माँगा जाए तो सत्य तक पहुँचने की सामाजिक व्यवस्था ही पक्षपाती हो जाती है।

“अउ साँच सुनबे को धरम किसको है?” पुष्पा ने पूछा। राम पुरजनों से कहते हैं:-

जौ अनीति कछुभाषी भाई। तौमीहजरजहु भय बिसरौ।।

(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 43 से पूर्व, चौपाई 3 का उत्तरार्ध; राम का पुरजनों से कथन।)

‘मोहि बरजहु’ में शासक अपने निर्णय को टोकने का अधिकार देता है। आज इसे बरते तो आपत्ति सुनी जाए, तथ्य मिलान पर निर्णय सुनरे और कहने वाला प्रतिशोध से सुरक्षित रहे। सच बोलने वाले की प्रशंसा करके उसकी पूरी कीमत उसी के परिवार पर छोड़ देना हमारी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता।

मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गलत सम साँचा।

तुलसी छुअत पराड़ ज्यौ पारद पावक अँचा।।

(दोहावली, दोहा 339; मिथ्या और सत्य के प्रति विपरीत प्रवृत्तियाँ।)

झुट से धुप्या और अप्रिय सत्य से पलायन मनुष्य की प्रवृत्ति पहचानने में सहायक है। फिर भी एक भूल से किसी को ‘खल’ घोषित कर देना उसी उतावली में लौटना होगा जिसकी हम जाँच कर रहे थे।

“तौ पहिचान ई भी है कि साँच सामने आवै, तब आदमी का करै”, पुष्पा ने कहा। “हमाई बात गलत निकरै तौ हम मानै; दूसरे सेई सारी सरहशीलता कहै मोगि?”

सौरभ धीरज तेहि रथ चका। सत्य सील दुइ ध्वजा पताका।।

(रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दोहा 80 से पूर्व, चौपाई 3 का पूर्वार्ध; राम का विभीषण को धर्मरथ-वर्णन।)

‘सत्य के साथ शील है’, मैंने कहा। “सही बात कहने वाला भी दूसरे का अपमान करके आनंद लेने लगे तो अपने आचरण की परीक्षा से बच नहीं सकता।”

की मुख पट दीन्है रँहैज्या अर्थ भाषता। तुलसी या संसारमें सो बिचारजुव संता।।

बोलै बचन बिचारि कैलीन्है संत सुभावा। तुलसी दुख दुबंचन के पंथ देत नहिं पाँवा।।

(वैराग्यसंदीपनी, दोहे 11-12; विचारपूर्वक बोलने का संतस्यभावा।)

“पर जाँच पूरी होय तबई बोली, तौ जाके संगु भओ, ऊ कब बोलै?”

“अपनी पीड़ा कहने और सहायता माँगने के लिए सारे प्रमाण जुटाना शर्त नहीं। जो मालूम है, उसे कहें; संदेह को संदेह कहें। आरोपित का उत्तर भी सुना जाए, लेकिन उसके इन्कार से शिकायत खारिज नहीं होती।”

पुष्पा ने सरपू की ओर देखा। “बब्बा जगत को झुठो भी कहत है। फिर ई साँच कहाँ टिकै?”

झुठो है, झुठो है, झुठो सदा जुत, संत कहत जे अंतु लहा है।

(कवितावली, उत्तरकाण्ड, इस आरम्भ वाला संवैया, पहली पंक्ति; गीताप्रेस, 2017, पृ. 911।)

कोठ कह सत्य, झुट कह कौऊ, जुगल प्रवक्त कोउ मानै।

तुलसिदास परिहै तैरै भ्रम, सो आपन पहिचनौ।।

विनयपत्रिका, पद 111, अंतिम पदंश; ‘केसव! कहि न जाइ का कहिये’ में जगत और आत्मबोध का प्रश्न।

“यहाँ जात की परम वाल्मिकिता, मोह और आत्मपहचान का विचार है। मोहन ने डाल काटी या गिरी डाल हटाई, इसकी जाँच दूसरे स्तर की है। संसार की नखरता से उसकी रोजी और अपमान का दुख निरर्थक नहीं हो जाता।”

उस दिन पड़ोसी ने पहले लिखा था, ‘कुछ गलतफर्मी हो गई थी।’ उससे आरोप किसने लगाया, किस पर लगाया, सब छिप गया था। फिर उन्होंने साफ लिखा कि गिरी डाल काटते देखकर मोहन पर पेंड से डाल काटने का गलत आरोप लगाया था; पहला संदेश वापस लेते हैं। पढ़ते हुए मोहन की उँगली अपने नाम पर ठहरी थी।

“अपने लिखे में सुधार बब्बा ने भी माँगे हैं”, पुष्पा बोलौ।

यह विराग संदीपनी सुजन सुचित सुनि लेहु।

अनुचित बचन बिचारि के जस सुधारि तस देहु।।

(वैराग्यसंदीपनी, दोहा 62; ग्रंथ के अंत में सुजनों से कवि का निवेदन।)

घाट पर एक परिवार अपने यात्रियों की बात जोह रहा था। हम भी टिडके मोहन को भेजा गया सुधार कितनों ने पछा छोड़, हम नहीं जानते थे। जहाँ आरोप पहुँचा, वहाँ उसका खंडन पहुँचाने का श्रम बाकी था। सार्वजनिक आरोप लगाने वाला अपने कथन के आधार और परिणाम, दोनों का उत्तरदायी है। तथ्य जाँचना, अनिश्चितता बताना, उत्तर सुनना और भूल उजागर होने पर स्पष्ट सुधार करना इसी दायित्व के अंग है। हमारे कथन से किसी को साख पटो हो तो उसे लौटाने का प्रयत्न भी हमें करना होगा।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फ़ोस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विभिन्नित प्रोफ़ेसर।)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और ‘सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत’ से प्रेरित हैं।)

भारतीय परंपरा, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सामाजिक संगठन के विचार का ऐतिहासिक संगम

विजयदशमी, संघ स्थापना और राष्ट्र चेतना का संकल्प



वासुदेव देवनानी

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कुछ तिथियां केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं होतीं, वे विचार और संकल्प की प्रतीक बन जाती हैं। विजयदशमी ऐसी ही एक तिथि है। भगवान श्रीराम की रावण पर विजय और देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय से जुड़ा यह पर्व धर्म, न्याय, साहस और मर्यादा की प्रतिष्ठा का संदेश देता है। इसी दिन 27 सितंबर 1925 को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।

इस चयन को केवल एक धार्मिक पर्व के साथ संघटन के जन्म का संयोग मानकर छोड़ देना पर्याप्त नहीं होगा। संघ की वैचारिक परंपरा में विजयदशमी का अर्थ आत्मविश्वास, संगठन और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के संकल्प से भी जोड़ा जाता है।

पर्व से प्रेरणा तक :- भारतीय समाज में त्योहार सामाजिक जीवन को जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। वे पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक-संवाद स्थापित करते हैं और जीवन-मूल्यों को लोकपरंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। विजयदशमी का संदेश विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि शक्ति का उपयोग मर्यादा की रक्षा के लिए होना चाहिए और किसी भी उपलब्धि के साथ नैतिक जिम्मेदारी जुड़ी होती है।

डॉ. हेडगेवार ने जिस समय संघ की स्थापना की, उस समय भारत औपनिवेशिक शासन के अधीन था। स्वतंत्रता की आकांक्षा व्यापक हो रही थी, किंतु समाज में अनेक प्रकार के विभाजन और संगठन संबंधी चुनौतियां भी मौजूद थीं। संघ के संस्थापक ने सामाजिक संगठन और अनुशासित स्वयंसेवक निर्माण को राष्ट्रीय जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना।

राष्ट्र चेतना का अर्थ :- राष्ट्र चेतना केवल देश के प्रति भावनात्मक लगाव का नाम नहीं है। इसमें नागरिक

कर्तव्य, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, कानून का सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और संकट के समय सामूहिक सहयोग की भावना भी शामिल है।

संघ की शाखा व्यवस्था इसी उद्देश्य के विक्सित की गई कि लोग नियमित रूप से मिलें, एक-दूसरे के साथ कार्य करना सीखें और व्यक्तिगत हित से आगे बढ़कर सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूक हों। संघ की विचारधारा में सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता को परस्पर जुड़ा हुआ माना जाता है।लेकिन आधुनिक लोकतंत्र में राष्ट्र चेतना की व्यापकता का परीक्षण इस बात से भी होता है कि देश की विविध भाषाओं, आस्थाओं और समुदायों के लोग उसमें अपना समान स्थान अनुभव करते हैं या नहीं। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक आत्मबोध तभी स्थायी बनते हैं, जब वे परस्पर सम्मान और समान नागरिक अधिकारों के साथ आगे बढ़ें।

सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक भारत :-भारत की संस्कृति किसी एक कालखंड की रचना नहीं है। इसमें वैदिक और उपनिषदिक परंपराओं, बौद्ध-जैन विचारों, भक्ति और सूफी धाराओं,

लोककलाओं, क्षेत्रीय भाषाओं तथा अनेक सामाजिक आंदोलनों का योगदान है। इसकी जीवंतता का कारण विभिन्न परंपराओं का संवाद और समय के साथ स्वयं को बदलने की क्षमता भी रही है। संघ की सांस्कृतिक दृष्टि भारतीय सभ्यतागत विरासत और हिंदू पहचान पर विशेष जोर देती है। समर्थकों के अनुसार, इससे समाज में सांस्कृतिक आत्मविश्वास और संगठन की भावना को बल मिला है। आलोचकों का मत है कि इस दृष्टि के सभी समुदायों की समान भागीदारी और भारत के बहुलतावादी स्वरूप के संदर्भ में निरंतर परखना आवश्यक है।

यह बहस इस बात की याद दिलाती है कि सांस्कृतिक गौरव का उद्देश्य अतीत की उपलब्धियों का स्मरण भर नहीं, बल्कि वर्तमान में न्यायपूर्ण और जिम्मेदार समाज का निर्माण भी होना चाहिए।

विजय का वास्तविक अर्थ :-विजयदशमी का सबसे गहरा संदेश आत्मविजय है। रावण के दस सिरों को प्रतीकात्मक रूप से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार और अन्य मानवीय कमजोरियों से जोड़कर भी देखा जाता है। यह व्याख्या हमें बताती है कि

विकसित भारत के लिए शिक्षा

2020 के प्रभावी क्रियान्वयन केलिये यहवस्था की गुणवत्ता पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है। शिक्षा अधिष्ठान विधेयक के अंतर्गत सम्मिलित नवाचारों का व्यावहारिक क्रियान्वयन जरूरी है। अभी हमारे विश्वविद्यालय विश्व स्तर पर बहुत नीचे के पायदान पर हैं। ज्ञान परम्परा के अंतर्गत विश्वविद्यालयों को समृद्धकिए जाने की सोच ठीक है परन्तु जब तक विश्वविद्यालयों को विश्व-स्तर से जुड़े आयामों से नहीं जोड़ा जाएगा, वे बहुत अधिक योग्य मानव संसाधन प्रदान नहीं कर पाएंगे। इसलिये जरूरी है कि वहां ऐसे पाठ्यक्रम और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतर संचालित कि जाय जिनसे विद्यार्थी समय के अनुकूल और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बने रह सकें।

शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अत: विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबन्धन करना चाहिए। श्रेष्ठ शिक्षा

के साथ एकीकृत ऐसी शिक्षा प्रणाली हमारे यहां बने जिससे वैश्विक स्तर पर शिक्षा का लाभ विद्यार्थी को मिले। यह सच है, हमारे विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए विदेशी छात्र-छात्राओं का आकर्षण तभी होगा जब वे श्रेष्ठतम ज्ञान केन्द्र बनेंगे। जह यहां का शिक्षा का स्तर को बढ़ेगा। शिक्षा में शोध और अनुसंधान की मौकह दृष्टि विकसित की जाएगी। अमेरिका, यूके, जापान, जर्मनी, सिंगापुर, साउथ कोरिया आदि देशों की शिक्षा प्रणालियों इस समय बेहतरीन मानी जाती है। वहां कैसे और किसी तरह से विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है, इसका अध्ययन जरूरी है। विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे विश्व के टॉप रैंकिंग वाले विश्वविद्यालयों की तर्ज पर अपने यहां पाठ्यक्रमों और पढ़ाई के आधुनिक तकनीक का विकास करें।

गांव और शहर का भेद मिटाते हुए देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के

सार्वजनिकरण के लिए तेजी से काम करने की आवश्यकता है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबके प्रयास के अंतर्गत भारत को 2047 में विकसित राष्ट्र बनाने की जो दृष्टि संजोई गई है, उसका आधार सफल सिद्धांत मान गए हैं। यह सिद्धांत है-समावेशी शिक्षा, अतिम छोर तक विकास की पहुँच, बुनियादी ढाँचा और प्रभावी निवेश, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण के साथ विकास, युवाशक्ति का देश के विकास के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतरीन उपयोग और वित्तीय क्षेत्र को सुदृढ करते हुए राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का बेहतर प्रबंधन। शिक्षा इस सबका मूलाधार है। शैक्षिक उन्नयन यदि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनेगा, तभी हम विकसित भारत के संकल्प को प्रभावी रूप में क्रियाप्तिव कर पाएंगे।

—**डॉ. अरुणा व्यास, लेखिका।**

लॉस एंजिल्स ओलम्पिक की ओर बढ़ती मंजू की साइकिल

राजस्थान की साइकिलिंग प्रतिभाओं को मिला खेल जगत का बड़ा प्रोत्साहन



अनीशा सहारन

बालोत्तरा की मंजू चौधरी से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले साइकिल चालकों तक राजस्थान की साइकिलिंग की कहानी एक व्यापक खेल बदलाव की दशार्ती है-जिसे प्रतिभा खोज, बुनियादी ढांचे, वित्तीय सहायता और एथलीट कल्याण में बढ़ते निवेश का मजबूत समर्थन हासिल है। मंजू का सपना 2028 लॉस एंजिल्स ओलम्पिक में देश का

प्रतिनिधित्व करना और मेडल जीतना है। वहां लड़कियों के लिए साइकिलिंग स्पर्धाओं में 11 गोल्ड दंव पर होंगे। 2007 में जन्मी युवा मंजू चौधरी के लिए यह सफर पहले से ही पदकों की एक असाधारण झड़ी लगा चुका है। उन्होंने रोड, ट्रैक, स्कूल, यूनिवर्सिटी और खेलो इंडिया प्रतियोगिताओं में नौ राष्ट्रीय स्तर के पदक-एक स्वर्ण, चार रजत और चार कांस्य-जीते हैं। उनकी उपलब्धियों में खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में इंडिविजुअल टाइम ट्रायल में स्वर्ण पदक, 2025 नेशनल रोड साइकिलिंग चैंपियनशिप में 60 किलोमीटर मिक्स्ड टीम रिले में रजत पदक, नेशनल साइकिलिंग चैंपियनशिप में ओम्नियम में कांस्य पदक और 2026 अस्मिता विमेंस साइकिलिंग लीग में जूनियर महिला कीर्तिम में कांस्य पदक शामिल हैं। फिर भी मंजू की कहानी उनके मेडलों की अलमारी से कहीं बढ़कर है।

भजनलाल शर्मा सरकार के नेतृत्व में, जमीनी स्तर पर खेल प्रतिभाओं की पहचान करने, बुनियादी ढांचे को

मजबूत करने, वित्तीय सहायता प्रदान करने और ऐसे रास्ते बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसके माध्यम से युवा एथलीट उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं की ओर आगे बढ़ सकें। साइकिलिंग जैसे खेल के लिए यह दृष्टिकोण विशेष रूप से मूल्यवान साबित हो सकता है।

साइकिलिंग की महंगी हकीकत-

मंजू का अपना सफर प्रतिस्पर्धी साइकिलिंग के दूसरे पहलू को भी उजागर करता है। वह बकीनेरन में अपने गुरु जेठाराम के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण लेती है, जहां उनकी दैनिक रोड-ट्रेनिंग लगभग 60-90 किलोमीटर तक होती है और साप्ताहिक लंबी राइड लगभग 100-120 किलोमीटर तक पहुंच जाती है। लेकिन एक एथलीट के प्रशिक्षण शुरू करने से पहले ही, उपकरणों का एक बड़ा सवाल सामने आता है।

मंजू की प्रतिस्पर्धी साइकिल की मूल कीमत 2.35 लाख थी। उनके गुरु जेठाराम के अनुरोध पर विक्रेता इसे 1.36 लाख में देने पर सहमत

हुए और बाकी रकम को सामाजिक उपकार संस्थान मान कर अपना योगदान दिया। एक साइकिल खिलाड़ी को कम से कम दो साइकिलों की आवश्यकता होती है-एक प्रशिक्षण के लिए और दूसरी प्रतियोगिता के लिए। इससे उच्च स्तरीय प्रतियोगिता के लिए 8-10 लाख तक के उपकरण आवश्यक हो जाते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के एथलीट के लिए यह एक बहुत बड़ी बाधा है और फिर भी मंजू ने प्रतिस्पर्धा करना जारी रखा है। इसलिए उनकी कहानी यह दर्शाती है कि एक व्यापक खेल इकोसिस्टम क्यों मायने रखता है। वित्तीय सहायता, उपकरणों की मदद, गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और प्रशिक्षण सुविधाओं तक पहुंच यह तय कर सकती है कि होनहार एथलीट आगे बढ़ेंगे या प्रतिस्पर्धी खेल से गायब हो जाएंगे।

जेठाराम वर्तमान में लगभग 40 साइकिल चालकों को मेंटर कर रहे हैं। इस समूह में ऐसे साइकिल चालक शामिल हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर

प्रतिस्पर्धा की है, जबकि लगभग सात अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता तक पहुंचे हैं। यह एक महत्वपूर्ण बात की ओर इशारा करता है। राजस्थान की साइकिलिंग चुनौती शायद प्रतिभा की कमी नहीं है बल्कि उस प्रतिभा के चारों ओर एक मजबूत रास्ता बनाने की आवश्यकता है।

मंजू का यह जुनून, भजनलाल सरकार का साथ और ईश्वर की कृपा उसे कार्सन वेलोड्रोम, जहां लॉस एंजिल्स ओलम्पिक साइकिलिंग ट्रैक स्पर्धाएं होंगी, में गोल्ड मेडल दिलाए, यह मेरा विश्वास भी है, प्रार्थना है। विश्वास एक साइकिलिंग खिलाड़ी का, जिसने अपने खेल कैरियर में मंजूओं के के सपनों को संसाधन, प्रोत्साहन और उचित वातावरण के अभाव में पोडियम से पहले, यहां तक कि ट्रैक से पहले टूटते दिखाते देखा है, महसूस किया है, जिखा है।

—**अनीशा सहारन, नेशनल साइकिलिंग चैंपियनशिप में सिल्वर मेडल विजेता व डीआईपीआर में यंग मीडिया सहायक।**

	मेघ परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे।		सिंह नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अ
---	---	---	--